PRACTICES	HY.CUCUMBER (RAJDHANI- L5)	व्यवस्थापन	हाइब्रिड . खीरा (राजधानी L-5)
Field Sanitation	Remove residues of previous crops, weeds, old vines and diseased/damaged plant material before sowing. Keep the boundries of field clean to reduce pest and disease carry-over.	**खेत की सफाई**	बुवाई से पहले पिछली फसलों के अवशेष, खरपतवार, पुरानी बेलें और रोगग्रस्त/क्षतिग्रस्त पौधों को हटा दें। कीटों और रोगों के प्रसार को कम करने के लिए खेत की सीमाओं को साफ रखें।
Soil requirement	Sandy loam to loam soil, well-drained, fertile, with good organic matter. Ideal pH-range: around 6.0-7.0. Avoid waterlogging, as Cucumber is sensitive to excess moisture.	**मिट्टी की आवश्यकता**	बलुई दोमट से दोमट मिट्टी, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ और पर्याप्त जैविक पदार्थ युक्त। आदर्श पीएच सीमा: लगभग 6.0-7.0। जलभराव से बचें, क्योंकि खीरा अधिक नमी के प्रति संवेदनशील होता है।
Soil Testing	Conduct soil testing at least once every 2–3 years for EC, pH, OC, and macro-micro nutrients, and apply fertilizers based on test results.	**मृदा परीक्षण**	मिट्टी की ईसी, पीएच, ओईसी और वृहद-सूक्ष्म पोषक तत्वों की जांच कम से कम हर 2-3 साल में एक बार करें और परीक्षण परिणामों के आधार पर उर्वरक डालें।
Climate Suitability	Climate / Weather Requirement: Temperature: Optimum 25 – 35 °C. Rainfall: 120-150 mm is suitable for the crop. Sowing temperature: 22-30 °C	**जलवायु उपयुक्तता**	जलवायु/मौसम संबंधी आवश्यकताएँ: तापमान: 25-35 डिग्री सेल्सियस इष्टतम। वर्षा: फसल के लिए 120-150 मिमी उपयुक्त है। बुवाई का तापमान: 22-30 डिग्री सेल्सियस।
Land preparation	Land Preparation: Undertake 3–4 ploughings and harrowings to achieve fine tilth. Incorporate well-decomposed FYM (farmyard manure) when preparing the land.	**भूमि की तैयारी**	भूमि की तैयारी: अच्छी तरह से उपजाऊ बनाने के लिए 3-4 बार जुताई और हैरोइंग करें। भूमि तैयार करते समय अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद (फायदाद) मिलाएं।
Sowing Time	Sowing Time / Season: Sowing is recommended in February-March for early crops. In low-tunnel or protected cultivation, December sowing may be used for early yield.	**बुवाई का समय**	बुवाई का समय/मौसम: जल्दी पकने वाली फसलों के लिए फरवरी-मार्च में बुवाई की सलाह दी जाती है। कम ऊँचाई वाले टनल या संरक्षित खेती में, जल्दी उपज के लिए दिसंबर में बुवाई की जा सकती है।
Seed rate & Spacing	Spacing / Seed Rate / Sowing Method: Spacing: Beds of width 2.5 m; seeds sown at 60 cm spacing between plants on beds. Seed rate: Approx. 1.0 kg per acre. Sowing depth: 2-3 cm.	**बीज दर और दूरी**	बुवाई की विधि/बीज दर/बुवाई विधि: 2.5 मीटर चौड़ाई वाली क्यारियाँ; क्यारियों में पौधों के बीच 60 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज बोए जाते हैं। बीज दर: लगभग 1.0 किलोग्राम प्रति एकड़। बुवाई की गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।
Seed Treatment	Seed Treatment: Treat seeds before sowing (e.g., with suitable chemical such as Captan @ 2 g per kg seed) to protect against seed-borne diseases.	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीजों का उपचार करें (उदाहरण के लिए, कैप्टन जैसे उपयुक्त रसायन का प्रयोग करें, प्रति किलोग्राम बीज में 2 ग्राम की दर से)।
Weed Management	Fertilizer / Nutrient Management: Basal dose per acre: Urea 90 kg, SSP 125 kg, MOP 35 kg (equivalent to N 40 kg, P 20 kg, K 20 kg). Application: At land preparation apply basal; at sowing apply one third of nitrogen + full P & K; remaining N at vine growth stage.	**खरपतवार प्रबंधन**	उर्वरक/पोषक तत्व प्रबंधन: प्रति एकड़ आधारभूत खुराक: यूरिया 90 कि.ग्रा., एसएसपी 125 कि.ग्रा., एमओपी 35 कि.ग्रा. (जो नाइट्रोजन 40 कि.ग्रा., फास्फोरस 20 कि.ग्रा., पोटेशियम 20 कि.ग्रा. के समतुल्य है)। प्रयोग: खेत तैयार करते समय आधारभूत खुराक डालें; बुवाई के समय नाइट्रोजन का एक तिहाई भाग + फास्फोरस और पोटेशियम की पूरी मात्रा डालें; शेष नाइट्रोजन बेल की वृद्धि अवस्था में डालें।
Fertilizer Management	Weed Control: Use manual hoeing and/or chemical control. Example: Glyphosate @ 1.6 litre per 150 litre water for non-crop weeds.	**उर्वरक प्रबंधन**	खरपतवार नियंत्रण: हाथ से निराई-गुड़ाई और/या रासायनिक नियंत्रण का प्रयोग करें। उदाहरण: गैर-फसली खरपतवारों के लिए 150 लीटर पानी में 1.6 लीटर ग्लाइफोसेट का प्रयोग करें।
Irrigation Management	Irrigation: Frequent irrigation is required in summer; approx. 10-12 irrigations during the crop cycle. First irrigation pre-sowing, then every 2-3 days initially, later every 4-5 days. Drip irrigation is advantageous. Apni Kheti	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: गर्मियों में बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है; फसल चक्र के दौरान लगभग 10-12 बार सिंचाई। पहली सिंचाई बुवाई से पहले, फिर शुरुआत में हर 2-3 दिन में, बाद में हर 4-5 दिन में। ड्रिप सिंचाई लाभदायक है। अपनी खेती
Pest Management	Pest Management Fruit flies, aphids common pests. Neem oil @3% commonly recommended; practice crop hygiene.	**कीट प्रबंधन**	कीट प्रबंधन फल मक्खियाँ और एफिड्स आम कीट हैं। 3% नीम का तेल आमतौर पर अनुशंसित है; फसल की स्वच्छता का ध्यान रखें।
Disease Management	Disease Management Powdery mildew managed with fungicidal sprays (carbendazim etc.); mosaic and other foliar diseases controlled via appropriate sprays and sanitation.	**रोग प्रबंधन**	रोग प्रबंधन फफूंदनाशक स्प्रे (कार्बेंडाज़िम आदि) द्वारा पाउडरी मिल्ड्यू का प्रबंधन; मोज़ेक और अन्य पर्ण रोगों का नियंत्रण उपयुक्त स्प्रे और स्वच्छता के माध्यम से किया जाता है।
Harvesting & Yield	Harvesting / Yield: The crop starts yielding about 45-50 days after sowing. Apni Kheti Typically 10-12 pickings are done. Yield: ~33-42 qtl/acre.	**कटाई और उपज**	कटाई/उपज: बुवाई के लगभग 45-50 दिन बाद फसल से उपज शुरू हो जाती है। अपनी खेती: आमतौर पर 10-12 बार कटाई की जाती है। उपज: लगभग 33-42 क्विंटल प्रति एकड़।
Post-Harvest Management & Storage	Post-Harvest & Handling: Harvest fruits when young & green, using sharp tool to avoid damage. Handle carefully, sort/grading for market. (Note: detailed post-harvest handling may need to be adapted locally.)	**फसल कटाई के बाद का प्रबंधन और भंडारण**	कटाई के बाद और रखरखाव: फलों को कच्चा और हरा होने पर ही तोड़ें, क्षति से बचने के लिए तेज औजारों का उपयोग करें। सावधानीपूर्वक संभालें, बाजार के लिए छांटें/श्रेणी बनाएं। (नोट: कटाई के बाद के विस्तृत रखरखाव में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बदलाव की आवश्यकता हो सकती है।)
Disclaimer	These recommendations are based on SAUs, government agencies, and trial centers. Actual results may vary depending on soil type, climate, variety, and crop management practices.	**अस्वीकरण**	ये सिफ़ारिशें एसएयू, सरकारी एजेंसियों और परीक्षण केंद्रों पर आधारित हैं। वास्तविक परिणाम मिट्टी के प्रकार, जलवायु, किस्म और फसल प्रबंधन पद्धतियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।

PRACTICES	વ્યવસ્થાપન	હાઇબ્રિડ કાકડી (રાજધાની L-5)	पद्धती	हाइब्रिड . खीरा (राजधानी L-5)
Field Sanitation	**ખેતરની સ્વચ્છતા**	વાવણી પહેલાં પાછલા પાકના અવશેષો, નીંદણ, જૂની વેલા અને રોગગ્રસ્ત/ક્ષતિગ્રસ્ત છોડની સામગ્રી દૂર કરો. જીવાત અને રોગના ફેલાવાને ઘટાડવા માટે ખેતરની સીમાઓ સ્વચ્છ રાખો.	**फील्ड स्वच्छता**	पेरणी करण्यापूर्वी मागील पिकांचे अवशेष, तण, जुन्या वेली आणि रोगग्रस्त/खराब झालेले वनस्पतींचे अवशेष काढून टाका. कीड आणि रोगांचा प्रसार कमी करण्यासाठी शेताच्या सीमा स्वच्छ ठेवा.
Soil requirement	**માટીની જરૂરિયાત**	રેતાળ લોમથી લોમ જમીન, સારી રીતે પાણી નિતારેલી, ફળદ્રુપ, સારા કાર્બનિક પદાર્થોવાળી. આદર્શ pH-શ્રેણી: લગભગ 6.0-7.0. પાણી ભરાવાનું ટાળો, કારણ કે કાકડી વધુ પડતા ભેજ પ્રત્યે સંવેદનશીલ હોય છે.	**मातीची आवश्यकता**	वालुकामय चिकणमाती ते चिकणमातीयुक्त जमीन, उत्तम निचरा होणारी, सुपीक, आणि चांगल्या सेंद्रिय पदार्थांनी युक्त. आदर्श pH-श्रेणी: सुमारे ६.०-७.०. पाणी साचू देऊ नका, कारण काकडीचे पीक जास्त ओलाव्याला संवेदनशील असते.
Soil Testing	**માટી પરીક્ષણ**	EC, pH, OC અને મેક્રો-માઇક્રો પોષક તત્વો માટે ઓછામાં ઓછા દર 2-3 વર્ષે એક વાર માટી પરીક્ષણ કરો અને પરીક્ષણના પરિણામોના આધારે ખાતરો લાગુ કરો.	**माती परीक्षण**	दर २-३ वर्षांतून किमान एकदा EC, pH, OC आणि स्थूल-सूक्ष्म पोषक तत्वांसाठी माती परीक्षण करा आणि परीक्षणाच्या निकालांनुसार खते वापरा.
Climate Suitability	**આબોહવા યોગ્યતા**	આબોહવા / હવામાનની આવશ્યકતા: તાપમાન: શ્રેષ્ઠ 25 - 35 °C. વરસાદ: 120-150 મીમી પાક માટે યોગ્ય છે. વાવણી તાપમાન: 22-30 °C	**हवामान अनुकूलता**	हवामानाची आवश्यकता: तापमान: आदर्श २५ – ३५°C. पाऊस: पिकासाठी १२०-१५० मिमी पर्जन्यमान योग्य आहे. पेरणीसाठी तापमान: २२-३०°C.
Land preparation	**જમીનની તૈયારી**	જમીનની તૈયારી: સારી ખેતી મેળવવા માટે 3-4 ખેડાણ અને હેરોઇંગ કરો. જમીન તૈયાર કરતી વખતે સારી રીતે વિઘટિત એફવાયએમ (ખેતર ખાતર) નો ઉપયોગ કરો.	**जमिनीची तयारी**	जमिनीची मशागत: जमीन भुसभुशीत होण्यासाठी ३-४ वेळा नांगरणी आणि कुळवणी करा. जमीन तयार करताना चांगले कुजलेले शेणखत जमिनीत मिसळा.
Sowing Time	**વાવણી સમય**	વાવણીનો સમય / ઋતુ: વહેલા પાક માટે ફેબ્રુઆરી-માર્ચમાં વાવણી કરવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે. ઓછી ટનલ અથવા સંરક્ષિત ખેતીમાં, ડિસેમ્બર વાવણીનો ઉપયોગ વહેલા ઉપજ માટે થઈ શકે છે.	**पेरणीची वेळ**	पेरणीची वेळ / हंगाम: लवकर येणाऱ्या पिकांसाठी फेब्रुवारी-मार्चमध्ये पेरणी करण्याची शिफारस केली जाते. कमी उंचीच्या बोगद्यातील किंवा संरक्षित मशागतीमध्ये, लवकर उत्पन्नासाठी डिसेंबरमध्ये पेरणी केली जाऊ शकते.
Seed rate & Spacing	**બીજ દર અને અંતર**	અંતર / બીજ દર / વાવણી પદ્ધતિ: અંતર: 2.5 મીટર પહોળાઈના પથારી; પથારી પર છોડ વચ્ચે 60 સે.મી.ના અંતરે બીજ વાવેલા. બીજ દર: આશરે 1.0 કિલો પ્રતિ એકર. વાવણી ઊંડાઈ: 2-3 સે.મી.	**बियाणे दर आणि अंतर**	अंतर / बियाणे दर / पेरणी पद्धत: अंतर: २.५ मीटर रुंदीचे वाफे; वाफ्यांवर रोपांमध्ये ६० सेंमी अंतरावर बियाणे पेरावे. बियाणे दर: अंदाजे १.० किलो प्रति एकर. पेरणीची खोली: २-३ सेंमी.
Seed Treatment	**બીજ માવજત**	બીજ માવજત: બીજજન્ય રોગો સામે રક્ષણ મેળવવા માટે વાવણી પહેલાં બીજની માવજત કરો (દા.ત., યોગ્ય રસાયણ જેમ કે કેપ્ટન @ 2 ગ્રામ પ્રતિ કિલો બીજ સાથે).	**बियाणे प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया: बियाण्यांद्वारे पसरणाऱ्या रोगांपासून संरक्षण करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाण्यांवर प्रक्रिया करा (उदा., कॅप्टनसारख्या योग्य रसायनाने @ २ ग्रॅम प्रति किलो बियाणे).
Weed Management	**નીંદણ વ્યવસ્થાપન**	ખાતર / પોષક તત્વોનું સંચાલન: એકર દીઠ મૂળભૂત માત્રા: યુરિયા 90 કિલો, SSP 125 કિલો, MOP 35 કિલો (N 40 કિલો, P 20 કિલો, K 20 કિલો સમકક્ષ). ઉપયોગ: જમીનની તૈયારી કરતી વખતે બેઝલ લાગુ કરો; વાવણી કરતી વખતે નાઇટ્રોજનનો ત્રીજો ભાગ + સંપૂર્ણ P & K; બાકી રહેલ નાઇટ્રોજન વેલાના વિકાસના તબક્કે આપો.	**तण व्यवस्थापन**	खत / पोषक तत्व व्यवस्थापन: प्रति एकर पायाभूत मात्रा: युरिया ९० किलो, एसएसपी १२५ किलो, एमओपी ३५ किलो (४० किलो नायट्रोजन, २० किलो फॉस्फरस, २० किलो पोटॅशियमच्या समतुल्य). वापर: जमीन तयार करताना पायाभूत मात्रा द्या; पेरणीच्या वेळी एक तृतीयांश नायट्रोजन + पूर्ण फॉस्फरस आणि पोटॅशियम द्या; उर्वरित नायट्रोजन वेलीच्या वाढीच्या टप्प्यावर द्या.
Fertilizer Management	**ખાતર વ્યવસ્થાપન**	નીંદણ નિયંત્રણ: હાથથી ખોદકામ અને/અથવા રાસાયણિક નિયંત્રણનો ઉપયોગ કરો. ઉદાહરણ: બિન-પાક નીંદણ માટે ગ્લાયફોસેટ @ 1.6 લિટર પ્રતિ 150 લિટર પાણી.	**खत व्यवस्थापन**	तण नियंत्रण: हाताने खुरपणी आणि/किंवा रासायनिक नियंत्रणाचा वापर करा. उदाहरणार्थ: पिकांव्यतिरिक्त इतर तणांसाठी १५० लिटर पाण्यात १.६ लिटर ग्लायफोसेट वापरा.
Irrigation Management	**સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન**	સિંચાઈ: ઉનાળામાં વારંવાર સિંચાઈ જરૂરી છે; પાક ચક્ર દરમિયાન આશરે 10-12 સિંચાઈ. વાવણી પહેલાં પ્રથમ સિંચાઈ, પછી શરૂઆતમાં દર 2-3 દિવસે, પછી દર 4-5 દિવસે. ટપક સિંચાઈ ફાયદાકારક છે. અપની ખેતી	**सिंचन व्यवस्थापन**	सिंचन: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचनाची आवश्यकता असते; पीक चक्रात अंदाजे १०-१२ वेळा सिंचन करावे लागते. पहिले सिंचन पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला दर २-३ दिवसांनी आणि नंतर दर ४-५ दिवसांनी करावे. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. आपली शेती
Pest Management	**જીવાત વ્યવસ્થાપન**	જીવાત વ્યવસ્થાપન ફળમાખીઓ, એફિડ સામાન્ય જીવાત છે. લીમડાનું તેલ @3% સામાન્ય રીતે ભલામણ કરવામાં આવે છે; પાકની સ્વચ્છતાનું પાલન કરો.	**कीड व्यवस्थापन**	कीड व्यवस्थापन फळमाशी, मावा या सामान्य कीड आहेत. सामान्यतः ३% कडुलिंबाच्या तेलाची शिफारस केली जाते; पिकाच्या स्वच्छतेचे पालन करा.
Disease Management	**રોગ વ્યવસ્થાપન**	રોગ વ્યવસ્થાપન ભૂકી માઇલ્ડ્યુ ફૂગનાશક છંટકાવ (કાર્બેન્ડાઝીમ વગેરે) દ્વારા નિયંત્રિત થાય છે; મોઝેક અને અન્ય પાંદડા પરના રોગો યોગ્ય છંટકાવ અને સ્વચ્છતા દ્વારા નિયંત્રિત થાય છે.	**रोग व्यवस्थापन**	रोग व्यवस्थापन भुरी रोगाचे व्यवस्थापन बुरशीनाशक फवारण्यांनी (कार्बेंडाझिम इत्यादी) केले जाते; मोझॅक आणि इतर पानांवरील रोगांवर योग्य फवारण्या आणि स्वच्छतेद्वारे नियंत्रण ठेवले जाते.
Harvesting & Yield	**લણણી અને ઉપજ**	લણણી / ઉપજ: વાવણી પછી લગભગ 45-50 દિવસ પછી પાક ઉપજ આપવાનું શરૂ કરે છે. અપની ખેતી સામાન્ય રીતે 10-12 વખત કાપણી કરવામાં આવે છે. ઉપજ: ~33-42 ક્વિન્ટલ/એકર.	**कापणी आणि उत्पन्न**	काढणी / उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न मिळू लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा वेचणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.
Post-Harvest Management & Storage	**લણણી પછીનું સંચાલન અને સંગ્રહ**	લણણી પછી અને સંભાળ: ફળો નાના અને લીલા હોય ત્યારે કાપો, નુકસાન ટાળવા માટે તીક્ષ્ણ ઓજારનો ઉપયોગ કરો. કાળજીપૂર્વક હાથ ધરો, બજાર માટે વર્ગીકરણ/ગ્રેડિંગ કરો. (નોંધ: લણણી પછીની વિગતવાર સંભાળ સ્થાનિક રીતે અનુકૂલિત કરવાની જરૂર પડી શકે છે.)	**कापणीनंतरचे व्यवस्थापन आणि साठवणूक**	काढणीनंतरची कार्यवाही आणि हाताळणी: फळे कोवळी आणि हिरवी असतानाच काढावीत. इजा टाळण्यासाठी धारदार अवजारांचा वापर करावा. काळजीपूर्वक हाताळावीत आणि बाजारासाठी त्यांची वर्गवारी/दर्जा निश्चित करावा. (टीप: काढणीनंतरच्या सविस्तर हाताळणीमध्ये स्थानिक पातळीवर बदल करण्याची आवश्यकता असू शकते.)
Disclaimer	**અસ્વીકરણ**	આ ભલામણો SAU, સરકારી એજન્સીઓ અને ટ્રાયલ સેન્ટરો પર આધારિત છે. વાસ્તવિક પરિણામો જમીનના પ્રકાર, આબોહવા, વિવિધતા અને પાક વ્યવસ્થાપન પદ્ધતિઓના આધારે બદલાઈ શકે છે.	**अस्वीकरण**	या शिफारसी एसएयू, सरकारी संस्था आणि चाचणी केंद्रांवर आधारित आहेत. प्रत्यक्ष परिणाम मातीचा प्रकार, हवामान, वाण आणि पीक व्यवस्थापन पद्धतींनुसार भिन्न असू शकतात.

PRACTICES	நடைமுறைகள்	கலப்பினத் குக்கும்பர் (ராஜ்தானி - L5)
Field Sanitation	**கள சுகாதாரம்**	விதைப்பதற்கு முன், முந்தைய பயிர்களின் எச்சங்கள், களைகள், பழைய கொடிகள் மற்றும் நோய் தாக்கிய/சேதமடைந்த தாவரப் பொருட்களை அகற்றவும். பூச்சி மற்றும் நோய் பரவுவதைக் குறைக்க, வயலின் வரப்புகளைச் சுத்தமாகப் பராமரிக்கவும்.
Soil requirement	**மண் தேவை**	மணல் கலந்த வண்டல் மண் முதல் வண்டல் மண் வரை, நல்ல வடிகால் வசதியுள்ள, வளமான, மற்றும் சிறந்த கரிமச்சத்துக்கள் கொண்ட மண். உகந்த pH அளவு: சுமார் 6.0-7.0. வெள்ளரிக்காய் அதிகப்படியான ஈரப்பதத்தால் பாதிக்கப்படக்கூடியது என்பதால், நீர் தேங்குவதைத் தவிர்க்கவும்.
Soil Testing	**மண் பரிசோதனை**	EC, pH, OC மற்றும் பேரூட்டச்சத்துக்கள், நுண்ணூட்டச்சத்துக்கள் ஆகியவற்றுக்காக, குறைந்தது 2-3 ஆண்டுகளுக்கு ஒருமுறை மண் பரிசோதனை செய்து, பரிசோதனை முடிவுகளின் அடிப்படையில் உரமிடவும்.
Climate Suitability	**காலநிலை பொருத்தம்**	காலநிலை / வானிலை தேவை: வெப்பநிலை: உகந்தது 25 – 35 °C. மழைப்பொழிவு: பயிருக்கு 120-150 மி.மீ. உகந்தது. விதைப்பு வெப்பநிலை: 22-30 °C
Land preparation	**நிலப் பரப்பு**	நிலம் தயாரித்தல்: நல்ல பதத்தை அடைய 3–4 முறை உழவு மற்றும் பரம்படித்தல் செய்யவும். நிலத்தைத் தயாரிக்கும்போது, நன்கு மக்கிய தொழு உரத்தைச் சேர்க்கவும்.
Sowing Time	**விதைப்பு நேரம்**	விதைக்கும் நேரம் / பருவம்: முன்கூட்டியே விளைச்சல் பெற, பிப்ரவரி-மார்ச் மாதங்களில் விதைப்பது பரிந்துரைக்கப்படுகிறது. குறைந்த உயரமுள்ள சுரங்கப்பாதை அல்லது பாதுகாக்கப்பட்ட சாகுபடியில், முன்கூட்டியே மகசூல் பெற டிசம்பர் மாதத்தில் விதைக்கலாம்.
Seed rate & Spacing	**விதை விகிதம் மற்றும் இடைவெளி**	இடைவெளி / விதை அளவு / விதைக்கும் முறை: இடைவெளி: 2.5 மீ அகலமுள்ள பாத்திகளில், செடிகளுக்கு இடையே 60 செ.மீ இடைவெளியில் விதைகள் விதைக்கப்பட வேண்டும். விதை அளவு: ஏக்கருக்கு சுமார் 1.0 கிலோ. விதைக்கும் ஆழம்: 2-3 செ.மீ.
Seed Treatment	**விதை சிகிச்சை**	விதை நேர்த்தி: விதைவழி நோய்களிலிருந்து பாதுகாக்க, விதைப்பதற்கு முன் விதைகளுக்கு நேர்த்தி செய்யுங்கள் (உதாரணமாக, ஒரு கிலோ விதைக்கு 2 கிராம் கேப்டன் போன்ற பொருத்தமான இரசாயனத்தைப் பயன்படுத்தி).
Weed Management	**களை மேலாண்மை**	உரம் / ஊட்டச்சத்து மேலாண்மை: ஏக்கருக்கு அடி உர அளவு: யூரியா 90 கிலோ, SSP 125 கிலோ, MOP 35 கிலோ (இது N 40 கிலோ, P 20 கிலோ, K 20 கிலோவிற்கு சமமானது). இடும் முறை: நிலம் தயாரிக்கும் போது அடி உரமிடவும்; விதைக்கும் போது மூன்றில் ஒரு பங்கு நைட்ரஜனுடன் முழுமையான P மற்றும் K-ஐ இடவும்; மீதமுள்ள நைட்ரஜனை கொடி வளரும் பருவத்தில் இடவும்.
Fertilizer Management	**உர மேலாண்மை**	களைக் கட்டுப்பாடு: கையால் கொத்தி எடுத்தல் மற்றும்/அல்லது இரசாயனக் கட்டுப்பாட்டைப் பயன்படுத்தவும். எடுத்துக்காட்டாக: பயிரல்லாத களைகளுக்கு, 150 லிட்டர் தண்ணீருக்கு 1.6 லிட்டர் கிளைபோசேட் என்ற அளவில் பயன்படுத்தவும்.
Irrigation Management	**நீர்ப்பாசன மேலாண்மை**	நீர்ப்பாசனம்: கோடை காலத்தில் அடிக்கடி நீர்ப்பாசனம் தேவைப்படுகிறது; பயிர் சுழற்சி காலத்தில் சுமார் 10-12 முறை நீர்ப்பாசனம் செய்ய வேண்டும். முதல் நீர்ப்பாசனம் விதைப்பதற்கு முன்பும், பின்னர் ஆரம்பத்தில் 2-3 நாட்களுக்கு ஒரு முறையும், பிறகு 4-5 நாட்களுக்கு ஒரு முறையும் செய்ய வேண்டும். சொட்டு நீர்ப்பாசனம் நன்மை பயக்கும். அப்னி கேத்தி
Pest Management	**பூச்சி மேலாண்மை**	பூச்சி மேலாண்மை பழ ஈக்கள், அசுவினிப் பூச்சிகள் பொதுவான பூச்சிகளாகும். 3% வேப்ப எண்ணெய் பொதுவாகப் பரிந்துரைக்கப்படுகிறது; பயிர் சுகாதாரத்தைக் கடைப்பிடிக்கவும்.
Disease Management	**நோய் மேலாண்மை**	நோய் மேலாண்மை சாம்பல் பூஞ்சை நோய், பூஞ்சைக்கொல்லித் தெளிப்புகள் (கார்பென்டாசிம் போன்றவை) மூலம் கட்டுப்படுத்தப்படுகிறது; மொசைக் மற்றும் பிற இலை நோய்கள், தகுந்த தெளிப்புகள் மற்றும் சுகாதார நடவடிக்கைகள் மூலம் கட்டுப்படுத்தப்படுகின்றன.
Harvesting & Yield	**அறுவடை மற்றும் மகசூல்**	அறுவடை / மகசூல்: விதைத்த சுமார் 45-50 நாட்களுக்குப் பிறகு பயிர் காய்க்கத் தொடங்கும். அப்னி கேத்தி முறையில் பொதுவாக 10-12 முறை அறுவடை செய்யப்படும். மகசூல்: ஏக்கருக்கு சுமார் 33-42 குவிண்டால்.
Post-Harvest Management & Storage	**அறுவடைக்குப் பிந்தைய மேலாண்மை மற்றும் சேமிப்பு**	அறுவடைக்குப் பின் மற்றும் கையாளும் முறை: பழங்கள் சேதமடையாமல் இருக்க, கூர்மையான கருவியைப் பயன்படுத்தி, அவை இளமையாகவும் பச்சையாகவும் இருக்கும்போதே அறுவடை செய்யவும். கவனமாகக் கையாண்டு, சந்தைக்காகத் தரம் பிரிக்கவும். (குறிப்பு: அறுவடைக்குப் பிந்தைய விரிவான கையாளும் முறைகள் அந்தந்தப் பகுதிக்கு ஏற்ப மாற்றியமைக்கப்பட வேண்டியிருக்கலாம்.)
Disclaimer	**மறுப்பு**	இந்தப் பரிந்துரைகள் சிறப்புப் பயன்பாட்டு அலகுகள் (SAU-கள்), அரசு நிறுவனங்கள் மற்றும் சோதனை மையங்களின் அடிப்படையில் அமைந்துள்ளன. உண்மையான முடிவுகள் மண் வகை, காலநிலை, பயிர் இரகம் மற்றும் பயிர் மேலாண்மை நடைமுறைகளைப் பொறுத்து மாறுபடலாம்.

PRACTICES	అభ్యాసాలు	సంకర కుకుంబర్ (రాజధాని - L5)	ಅಭ್ಯಾಸಗಳು	ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಕುಕುಂಬರ್ (ರಾಜಧಾನಿ - L5)
Field Sanitation	**క్షేత్ర పారిశుధ్యం**	విత్తనాలు నాటే ముందు గత పంటల అవశేషాలు, కలుపు మొక్కలు, పాత తీగలు మరియు వ్యాధి సోకిన/దెబ్బతిన్న మొక్కలను తొలగించండి. తెగుళ్లు మరియు వ్యాధులు వ్యాపించకుండా ఉండేందుకు పొలం సరిహద్దులను శుభ్రంగా ఉంచండి.	**ಕ್ಷೇತ್ರ ನೈರ್ಮಲ್ಯ**	ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ಹಿಂದಿನ ಬೆಳೆಗಳ ಅವಶೇಷಗಳು, ಕಳೆಗಳು, ಹಳೆಯ ಬಳ್ಳಿಗಳು ಮತ್ತು ರೋಗಪೀಡಿತ/ಹಾನಿಗೊಳಗಾದ ಸಸ್ಯ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ. ಕೀಟ ಮತ್ತು ರೋಗ ಹರಡುವಿಕೆಯನ್ನು ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಲು ಹೊಲದ ಗಡಿಗಳನ್ನು ಸ್ವಚ್ಛವಾಗಿಡಿ.
Soil requirement	**నేల అవసరం**	ఇసుకతో కూడిన బంకమట్టి నేల, నీరు నిలవనిది, సారవంతమైనది, మంచి సేంద్రియ పదార్థం కలది. అనువైన pH పరిధి: సుమారు 6.0-7.0. దోసకాయ అధిక తేమకు సున్నితమైనది కాబట్టి, నీరు నిలవకుండా చూసుకోండి.	**ಮಣ್ಣಿನ ಅವಶ್ಯಕತೆ**	ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮ್ ನಿಂದ ಲೋಮ್ ಮಣ್ಣು, ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀರು ಬಸಿದು ಹೋಗುವ, ಫಲವತ್ತಾದ, ಉತ್ತಮ ಸಾವಯವ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಮಣ್ಣು. ಸೂಕ್ತವಾದ pH ಶ್ರೇಣಿ: ಸುಮಾರು 6.0-7.0. ಸೌತೆಕಾಯಿ ಹೆಚ್ಚುವರಿ ತೇವಾಂಶಕ್ಕೆ ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿರುವುದರಿಂದ ನೀರು ನಿಲ್ಲುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ.
Soil Testing	**నేల పరీక్ష**	EC, pH, OC మరియు స్థూల-సూక్ష్మ పోషకాల కోసం ప్రతి 2–3 సంవత్సరాలకు కనీసం ఒకసారి నేల పరీక్షలు నిర్వహించి, పరీక్ష ఫలితాల ఆధారంగా ఎరువులను వేయండి.	**ಮಣ್ಣು ಪರೀಕ್ಷೆ**	EC, pH, OC ಮತ್ತು ಮ್ಯಾಕ್ರೋ-ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳಿಗಾಗಿ ಕನಿಷ್ಠ 2-3 ವರ್ಷಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಮಣ್ಣಿನ ಪರೀಕ್ಷೆಯನ್ನು ನಡೆಸಿ, ಮತ್ತು ಪರೀಕ್ಷಾ ಫಲಿತಾಂಶಗಳ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳನ್ನು ಅನ್ವಯಿಸಿ.
Climate Suitability	**వాతావరణ అనుకూలత**	వాతావరణ అవసరాలు: ఉష్ణోగ్రత: అనువైనది 25 – 35 °C. వర్షపాతం: పంటకు 120-150 మి.మీ. అనుకూలం. విత్తే ఉష్ణోగ్రత: 22-30 °C	**ಹವಾಮಾನ ಸೂಕ್ತತೆ**	ಹವಾಮಾನ / ಹವಾಮಾನದ ಅವಶ್ಯಕತೆ: ತಾಪಮಾನ: ಗರಿಷ್ಠ 25 – 35 ° C. ಮಳೆ: 120-150 ಮಿಮೀ ಬೆಳೆಗೆ ಸೂಕ್ತವಾಗಿದೆ. ಬಿತ್ತನೆ ತಾಪಮಾನ: 22-30 °C
Land preparation	**భూమి తయారీ**	భూమి తయారీ: మెత్తటి దుక్కిని సాధించడానికి 3–4 సార్లు దుక్కి దున్నండి మరియు చదును చేయండి. భూమిని సిద్ధం చేసేటప్పుడు బాగా కుళ్ళిన పశువుల ఎరువును (FYM) కలపండి.	**ಭೂಮಿ ತಯಾರಿಕೆ**	ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ: ಉತ್ತಮವಾದ ಉಳುಮೆ ಸಾಧಿಸಲು 3–4 ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ ಹದಗೊಳಿಸಿ. ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ ಚೆನ್ನಾಗಿ ಕೊಳೆತ ಕೊಟ್ಟಿಗೆ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಸೇರಿಸಿ.
Sowing Time	**విత్తే సమయం**	విత్తే సమయం / కాలం: ముందుగా పంటలు పండటానికి ఫిబ్రవరి-మార్చి నెలల్లో విత్తడం మంచిది. లో-టన్నెల్ లేదా రక్షిత సాగులో, త్వరగా దిగుబడి రావడానికి డిసెంబరులో విత్తవచ్చు.	**ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ**	ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ / ಋತು: ಆರಂಭಿಕ ಬೆಳೆಗಳಿಗೆ ಫೆಬ್ರವರಿ-ಮಾರ್ಚ್‌ನಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲು ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಲಾಗಿದೆ. ಕಡಿಮೆ ಸುರಂಗ ಮಾರ್ಗ ಅಥವಾ ಸಂರಕ್ಷಿತ ಕೃಷಿಯಲ್ಲಿ, ಆರಂಭಿಕ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ ಡಿಸೆಂಬರ್ ಬಿತ್ತನೆಯನ್ನು ಬಳಸಬಹುದು.
Seed rate & Spacing	**విత్తన రేటు మరియు అంతరం**	అంతరం / విత్తన మోతాదు / విత్తే విధానం: అంతరం: 2.5 మీటర్ల వెడల్పు గల మడులలో; మడులలో మొక్కల మధ్య 60 సెం.మీ. అంతరంతో విత్తనాలు విత్తాలి. విత్తన మోతాదు: ఎకరానికి సుమారుగా 1.0 కిలోగ్రాము. విత్తే లోతు: 2-3 సెం.మీ.	**ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ ಮತ್ತು ಅಂತರ**	ಅಂತರ / ಬೀಜ ದರ / ಬಿತ್ತನೆ ವಿಧಾನ: ಅಂತರ: 2.5 ಮೀ ಅಗಲದ ಹಾಸಿಗೆಗಳು; ಹಾಸಿಗೆಗಳ ಮೇಲೆ ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವೆ 60 ಸೆಂ.ಮೀ ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ. ಬೀಜ ದರ: ಎಕರೆಗೆ ಅಂದಾಜು 1.0 ಕೆಜಿ. ಬಿತ್ತನೆ ಆಳ: 2-3 ಸೆಂ.ಮೀ.
Seed Treatment	**విత్తన శుద్ధి**	విత్తన శుద్ధి: విత్తనాల ద్వారా సంక్రమించే వ్యాధుల నుండి రక్షించడానికి, విత్తే ముందు విత్తనాలను శుద్ధి చేయండి (ఉదాహరణకు, కిలో విత్తనానికి 2 గ్రాముల చొప్పున క్యాప్టాన్ వంటి తగిన రసాయనంతో).	**ಬೀಜೋಪಚಾರ**	ಬೀಜೋಪಚಾರ: ಬೀಜದಿಂದ ಹರಡುವ ರೋಗಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಿಸಲು ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವ ಮೊದಲು ಬೀಜೋಪಚಾರ ಮಾಡಿ (ಉದಾ. ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ 2 ಗ್ರಾಂ ಕ್ಯಾಪ್ಟಾನ್ ನಂತಹ ಸೂಕ್ತ ರಾಸಾಯನಿಕದಿಂದ).
Weed Management	**కలుపు నిర్వహణ**	ఎరువులు / పోషకాల నిర్వహణ: ఎకరానికి తొలివిడతగా వేయాల్సిన మోతాదు: యూరియా 90 కిలోలు, ఎస్.ఎస్.పి. 125 కిలోలు, ఎం.ఓ.పి. 35 కిలోలు (ఇది నత్రజని 40 కిలోలు, భాస్వరం 20 కిలోలు, పొటాషియం 20 కిలోలకు సమానం). వాడకం: భూమిని సిద్ధం చేసేటప్పుడు తొలివిడతగా వేయాలి; విత్తేటప్పుడు మూడింట ఒక వంతు నత్రజనితో పాటు పూర్తి భాస్వరం మరియు పొటాషియం వేయాలి; మిగిలిన నత్రజనిని తీగల పెరుగుదల దశలో వేయాలి.	**ಕಳೆ ನಿರ್ವಹಣೆ**	ರಸಗೊಬ್ಬರ / ಪೋಷಕಾಂಶ ನಿರ್ವಹಣೆ: ಎಕರೆಗೆ ಮೂಲ ಡೋಸ್: ಯೂರಿಯಾ 90 ಕೆಜಿ, ಎಸ್‌ಎಸ್‌ಪಿ 125 ಕೆಜಿ, ಎಂಒಪಿ 35 ಕೆಜಿ (ನೈಟ್ರೋಜನ್ 40 ಕೆಜಿ, ಫಾಸ್ಫೇಟ್ 20 ಕೆಜಿ, ಫಾಸ್ಫೇಟ್ 20 ಕೆಜಿಗೆ ಸಮ). ಬಳಕೆ: ಭೂಮಿಯನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ ಮೂಲ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಬಳಸಿ; ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವಾಗ ಸಾರಜನಕದ ಮೂರನೇ ಒಂದು ಭಾಗ + ಪೂರ್ಣ ಫಾಸ್ಫೇಟ್ ಮತ್ತು ಫಾಸ್ಫೇಟ್ ಮತ್ತು ಫಾಸ್ಫೇಟ್; ಉಳಿದ ಫಾಸ್ಫೇಟ್ ಅನ್ನು ಬಳ್ಳಿ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಅನ್ವಯಿಸಿ.
Fertilizer Management	**ఎరువుల నిర్వహణ**	కలుపు నియంత్రణ: చేతితో గునపంతో తవ్వడం మరియు/లేదా రసాయన నియంత్రణను ఉపయోగించండి. ఉదాహరణకు: పంటయేతర కలుపు మొక్కల కోసం 150 లీటర్ల నీటికి 1.6 లీటర్ల గ్లైఫోసేట్.	**ರಸಗೊಬ್ಬರ ನಿರ್ವಹಣೆ**	ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: ಕೈಯಿಂದ ಹೂಳೆತ್ತುವುದು ಮತ್ತು/ಅಥವಾ ರಾಸಾಯನಿಕ ನಿಯಂತ್ರಣವನ್ನು ಬಳಸಿ. ಉದಾಹರಣೆ: ಬೆಳೆಗೆ ಬೆಳೆಯದ ಕಳೆಗಳಿಗೆ 150 ಲೀಟರ್ ನೀರಿಗೆ 1.6 ಲೀಟರ್ ಗ್ಲೈಫೋಸೇಟ್.
Irrigation Management	**నీటిపారుదల నిర్వహణ**	నీటిపారుదల: వేసవిలో తరచుగా నీటిపారుదల అవసరం; పంట కాలంలో సుమారుగా 10-12 సార్లు నీటిపారుదల చేయాలి. మొదటిసారి విత్తనాలు నాటడానికి ముందు, ఆ తర్వాత మొదట్లో ప్రతి 2-3 రోజులకు, తర్వాత ప్రతి 4-5 రోజులకు నీటిపారుదల చేయాలి. బిందు సేద్యం ప్రయోజనకరమైనది. అప్నీ ఖేతి	**ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ**	ನೀರಾವರಿ: ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಆಗಾಗ್ಗೆ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿರುತ್ತದೆ; ಬೆಳೆ ಚಕ್ರದಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 10-12 ನೀರಾವರಿ. ಬಿತ್ತನೆಗೆ ಮೊದಲು ನೀರಾವರಿ, ನಂತರ ಪ್ರತಿ 2-3 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ, ನಂತರ ಪ್ರತಿ 4-5 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ನೀರಾವರಿ. ಹನಿ ನೀರಾವರಿ ಅನುಕೂಲಕರವಾಗಿದೆ. ಅಪ್ನಿ ಖೇತಿ.
Pest Management	**తెగుళ్ల నిర్వహణ**	తెగుళ్ల నివారణ పండు ఈగలు, పేనుబంక సాధారణ తెగుళ్లు. 3% వేప నూనెను సాధారణంగా సిఫార్సు చేస్తారు; పంట పరిశుభ్రతను పాటించండి.	**ಕೀಟ ನಿರ್ವಹಣೆ**	ಕೀಟ ನಿರ್ವಹಣೆ ಹಣ್ಣು ನೊಣಗಳು, ಗಿಡಹೇನುಗಳು ಸಾಮಾನ್ಯ ಕೀಟಗಳು. ಬೇವಿನ ಎಣ್ಣೆಯನ್ನು @3% ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ; ಬೆಳೆ ನೈರ್ಮಲ್ಯವನ್ನು ಪಾಲಿಸಿ.
Disease Management	**వ్యాధి నిర్వహణ**	వ్యాధి నివారణ బూజు తెగులును శిలీంధ్రనాశక స్ప్రేలతో (కార్బెండజిమ్ మొదలైనవి) నియంత్రిస్తారు; మొజాయిక్ మరియు ఇతర ఆకు తెగుళ్లను తగిన స్ప్రేలు మరియు పరిశుభ్రత ద్వారా అదుపు చేస్తారు.	**ರೋಗ ನಿರ್ವಹಣೆ**	ರೋಗ ನಿರ್ವಹಣೆ ಪುಡಿ ಶಿಲೀಂಧ್ರವನ್ನು ಶಿಲೀಂಧ್ರನಾಶಕ ಸಿಂಪಡಣೆಗಳಿಂದ (ಕಾರ್ಬೆಂಡಜಿಮ್ ಇತ್ಯಾದಿ) ನಿರ್ವಹಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ; ಮೊಸಾಯಿಕ್ ಮತ್ತು ಇತರ ಎಲೆ ರೋಗಗಳನ್ನು ಸೂಕ್ತ ಸಿಂಪಡಣೆಗಳು ಮತ್ತು ನೈರ್ಮಲ್ಯದ ಮೂಲಕ ನಿಯಂತ್ರಿಸಲಾಗುತ್ತದೆ.
Harvesting & Yield	**పంటకోత & దిగుబడి**	కోత / దిగుబడి: విత్తిన సుమారు 45-50 రోజుల తర్వాత పంట దిగుబడి ఇవ్వడం ప్రారంభిస్తుంది. అప్నీ ఖేతిలో సాధారణంగా 10-12 కోతలు కోస్తారు. దిగుబడి: ఎకరానికి ~33-42 క్వింటాళ్లు.	**ಕೊಯ್ಲು ಮತ್ತು ಇಳುವರಿ**	ಕೊಯ್ಲು / ಇಳುವರಿ: ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ ಸುಮಾರು 45-50 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಬೆಳೆ ಇಳುವರಿ ನೀಡಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸುತ್ತದೆ. ಅಪ್ನಿ ಖೇತಿ ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ 10-12 ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಇಳುವರಿ: ~33-42 ಕ್ವಿಂಟಲ್/ಎಕರೆ.
Post-Harvest Management & Storage	**పంట కోత అనంతర నిర్వహణ మరియు నిల్వ**	పంట కోత మరియు నిర్వహణ: పండ్లు లేతగా, పచ్చగా ఉన్నప్పుడే కోయండి. నష్టం జరగకుండా పదునైన పరికరాన్ని ఉపయోగించండి. వాటిని జాగ్రత్తగా నిర్వహించి, మార్కెట్ కోసం వేరు చేయండి/గ్రేడింగ్ చేయండి. (గమనిక: పంట కోత తర్వాత చేయాల్సిన నిర్వహణ వివరాలను స్థానికంగా మార్చుకోవాల్సి రావచ్చు.)	**ಕೊಯ್ಲಿನ ನಂತರದ ನಿರ್ವಹಣೆ ಮತ್ತು ಸಂಗ್ರಹಣೆ**	ಕೊಯ್ಲಿನ ನಂತರ ಮತ್ತು ನಿರ್ವಹಣೆ: ಹಣ್ಣುಗಳು ಚಿಕ್ಕದಾಗಿ ಮತ್ತು ಹಸಿರಾಗಿರುವಾಗ, ಹಾನಿಯಾಗದಂತೆ ಚೂಪಾದ ಉಪಕರಣವನ್ನು ಬಳಸಿ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಿ. ಎಚ್ಚರಿಕೆಯಿಂದ ನಿರ್ವಹಿಸಿ, ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ/ಶ್ರೇಣಿ ನೀಡಿ. (ಗಮನಿಸಿ: ವಿವರವಾದ ಕೊಯ್ಲಿನ ನಂತರ ನಿರ್ವಹಣೆಯನ್ನು ಸ್ಥಳೀಯವಾಗಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಬೇಕಾಗಬಹುದು.)
Disclaimer	**నిరాకరణ**	ఈ సిఫార్సులు SAUలు, ప్రభుత్వ సంస్థలు మరియు ప్రయోగాత్మక కేంద్రాల ఆధారంగా రూపొందించబడ్డాయి. నేల రకం, వాతావరణం, రకం మరియు పంట నిర్వహణ పద్ధతులను బట్టి వాస్తవ ఫలితాలు మారవచ్చు.	**ಹಕ್ಕುತ್ಯಾಗ**	ಈ ಶಿಫಾರಸುಗಳು SAUಗಳು, ಸರ್ಕಾರಿ ಸಂಸ್ಥೆಗಳು ಮತ್ತು ಪ್ರಾಯೋಗಿಕ ಕೇಂದ್ರಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿವೆ. ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ, ಹವಾಮಾನ, ವೈವಿಧ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಬೆಳೆ ನಿರ್ವಹಣಾ ಪದ್ಧತಿಗಳನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ನಿಜವಾದ ಫಲಿತಾಂಶಗಳು ಬದಲಾಗಬಹುದು.